

#७७৫

(कंदिरताय व्राप्त काठ ता (भाग प्रतिगंध नद्भर जामा तनक, तारक काठ ता प्याप्त तार्की जाव अवकी काठ सुकत (क्षण) भागत कर नविश्व रायक राय याग, अन्तर्व तक वाल्यता करण, इस पुत्र तार्म्य एस काठकाभ क्षणित के दूर यह यहती, विश्वयो हिन तर्वका। वद्ग दूरा एस ने द्वारा क्षण वर्षणा, तार्थ (र्यका चाठ ग्राव विनात्त्रतार्थ चारणा हिन।

• • •



Bookmark Publication

m November 27, 2019

https://bibijaan.com/id/2158